ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

वाद्य संगीतः अर्थ, महत्व एवं क्षेत्र

डॉ. भैरवी

सहायक प्रोफेसर राजकीय महिला महाविद्यालय, फरीदाबाद

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 20 Oct 2018

Keywords
ललित–कला वाद्य संगीत रंजक

ABSTRACT

इस शोध–पत्र में हम इस बात का अन्वेषण करने का प्रयास करेंगे कि संगीत के विविध आयामों में वाद्य संगीत का क्या स्थान है। वाद्य संगीत के लाभ–हानि, इसका वर्तमान स्वरूप एवं वाद्य संगीत का भविष्य इस शोध–पत्र के मूल विषय हैं।

भूमिकाः

संगीत एक ललित–कला है। सभी ललित कलाओं का मूल साध्य सौंदर्यानुभूति में निहित रहता है। संगीत कला पर भी यह सिद्धांत लागू होता है। संगीत एक समय सापेक्ष प्रदर्शन कला (Time-based performing art) है। इसके प्रस्तुतीकरण में कुछ समय लगता है। इसे रसिकों के समक्ष ही नियोजित करके प्रस्तुत करना होता है। इस कारण से यह मंच कला भी कहलाती है।

गीत, वाद्य एवं नृत्य के समावेष को संगीत कहते हैं।[1] इस प्रकार संगीत के तीन घटक होते हैं: गीत, वाद्य तथा नृत्य। यहां तीनों को विस्तार से समझ लेना आवश्यक है – यद्यपि हमारे विवेचन का प्रयोजन वाद्य संगीत ही है।

1. गीत – गीत का अर्थ है गाना। जब हम किसी कविता को स्वर एवं लय में बाँध कर गाते हैं, तब वह कविता गीत बन जाती है। लेकिन संगीत रत्नाकर में गीत की जो परिभाषा दी गयी है, उसके अनुसार गीत में शब्दों का होना आवश्यक नहीं होता। संगीत रत्नाकर में बताया गया है:

रंजको स्वर–संदर्भो गीतमित्यभिधीयते।[2]

अर्थात्, रंजक स्वरावलियों को गीत कहा जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि कोई भी धुन चाहे वह वाद्य पर ही बज रही हो, गीत कहलाती है।

2. वाद्य – वाद्य का अर्थ है – स्वरों को उत्पन्न करने वाला उपकरण। मानव कंठ से भी स्वर उत्पन्न होते हैं। इसलिए, मानव शरीर को दैवी वीणा की संज्ञा दी जाती है।[3] लेकिन सामान्यतः मानव कंठ को वाद्य की श्रेणी में नहीं रखा जाता। नाट्यशास्त्र में कहा गया है, "वदनात् वाद्यम"। अर्थात्, जिसमें ध्वनि उत्पन्न करने की क्षमता हो, वह वाद्य है। वाद्यों के कई प्रकार होते हैं। लेकिन उनका उल्लेख यहां अप्रासंगिक होगा। हमारा प्रयोजन वाद्य संगीत है। वाद्यों के वर्गीकरण की चर्चा यहां अनावश्यक होगी।

वाद्यों पर बजने वाला संगीत वाद्य संगीत के अंतर्गत सम्मिलित किया जाता है। गीत के साथ संगति के लिए भी जो वाद्य बजाये जाते हैं, वे वाद्य संगीत के अंतर्गत ही माने जायेंगे। नृत्य के साथ संगति के समय प्रयुक्त होने वाला वाद्य संगीत भी इसी श्रेणी में ही सम्मिलित किया जायेगा।

3. नृत्य – नृत्य का अर्थ है – अंगसंचालन तथा विभिन्न भाव–भंगिमाओं के द्वारा भावों को व्यक्त करना। नृत्य में गीत एवं वाद्य की संगति अनिवार्य होती है। बिना वाद्य संगीत के नृत्य अधूरा है। नृत्य भी अनेक प्रकार के होते हैं। लेकिन यहां हम नृत्य के प्रकारों की चर्चा नहीं करेंगे।

वाद्य संगीत का क्षेत्रः

यद्यपि संगीत रत्नाकर में गीत को उत्तम तथा वाद्य को मध्यम बताया गया है। लेकिन आधुनिक परिस्थितियों में वाद्य संगीत का प्रयोग इतना अधिक विस्तृत हो गया है कि हम इसे मध्यम श्रेणी का नहीं कह सकते। आज गीत एवं नृत्य दोनों, वाद्य के बिना अधूरे हैं। बिना किसी वाद्य के गीत केवल गेय काव्य बन कर रह जायेगा। इसी प्रकार, बिना वाद्य के नृत्य भी व्यायाम की मुद्रा बन कर रह जायेगा। नृत्य एवं गीत दोनों में वाद्यों की संगति अनिवार्य होती है। इस प्रकार, वाद्य नृत्य एवं गीत का पूरक हो जाता है। बिना वाद्य के न तो गीत संभव है ओर न ही नृत्य की कल्पना की जा सकती है। वाद्य ही संगीत को लय एवं ताल का आधार प्रदान करता है। यह संगीत में अनुगूँज को विस्तार देता है। इसी के आधार पर षड्ज की स्थापना होती है। वाद्य संगीत का प्राण है। वाद्य संगीत से संगीत कला में निखार और आकर्षण पुष्ट होता है। वाद्य संगीत का क्षेत्र व्यापक एवं विस्तृत है। इसमें संगीत की तीनों शाखायें – गीत, वाद्य एवं नृत्य सम्मिलित हो जाती हैं। वैसे तो मानव–कंठ भी दैवी वीणा होने के कारण वाद्य ही है। लेकिन यह ईश्वर निर्मित होने के कारण वाद्यों की श्रेणी में नहीं आता। मानव निर्मित नादात्मक उपकरण वाद्यों के क्षेत्र में शामिल किये जाते हैं। इस प्रकार, सभी उपकरण, जो संगीतात्मक ध्वनियां उत्पन्न करने में सक्षम होते हैं, वाद्य कहलाते हैं।

वाद्यों का क्षेत्र तीन मूल बिंदुओं से निर्धारित किया जा सकता है:

1. स्वतंत्र वादन का क्षेत्र,
2. संगति वादन का क्षेत्र,
3. वाद्य–वृंद।

1. **स्वतंत्र वादन का क्षेत्र** – यह क्षेत्र हाल में बहुत अधिक चर्चा में रहा है। अनेक नये वाद्य जो पूर्व में केवल संगति वाद्य समझे जाते थे, आधुनिक–कालीन वादन में स्वतंत्र वाद्य के रूप में स्थापित हो गये हैं। अनेक नवीन वाद्यों का विकास पिछले तीन–चार सौ वर्षों में हुआ है। हार्मोनियम, वॉयलिन, मैंडोलियन आदि वाद्य आधुनिक काल में विकसित हुए हैं। फिर भी, वे वाद्य अपना स्वतंत्र अस्तित्व स्थापित कर चुके हैं। इसके अतिरिक्त शहनाई, संतूर, इत्यादि वाद्य जिनका स्वतंत्र वादन पहले सुनने को नहीं मिलता था, आज स्वतंत्र वाद्यों के रूप में जाने जाते हैं। जलतरंग जैसे वाद्यों को भी स्वतंत्र रूप से बजाया जा रहा है। इस प्रकार हम देखते हैं कि स्वतंत्र वादन के क्षेत्र में पर्याप्त प्रगति हो रही है।
2. **संगति वादन का क्षेत्र** – संगति वाद्यों के क्षेत्र में भी वृद्धि हुई है। प्राचीन काल में केवल वीणा, मृदंग, दुंदुभी, इत्यादि के द्वारा ही नृत्य एवं गायन की संगति होती थी। मध्यकाल में सारंगी अस्तित्व में आयी। सारंगी के साथ कत्थक में सितार की संगति भी होने लगी। तबला भी मध्यकाल में ही लोकप्रिय हुआ। आज तो तबले ने पखावज को बहुत पीछे छोड़ दिया है।

   एक और संगति वाद्य, जिसकी चर्चा कम ही होती है, वह है, तानपुरा या तंबूरा। यह वाद्य शास्त्रीय संगीत का प्राण तत्त्व है। इसके बिना संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। यह बात अलग है कि आजकल तानपुरा इलेक्ट्रानिक वाद्य के रूप में भी उपलब्ध है तथा इसकी मोबाइल श्रृंखला भी उपलब्ध हो गयी है। ऐंड्राइड तथा ऐपल, दोनों ही प्रमुख मोबाइल कंपनियां तानपुरे के विभिन्न रूप आपके मोबाइल हैंडसेट के लिए बना रहे हैं।

   नवीन संगति वाद्यों में हार्मोनियम, वॉयलिन, बाँसुरी इत्यादि लोकप्रिय हो रहे हैं। संगति वाद्यों का क्षेत्र भी विस्तृत होता जा रहा है। इस का भविष्य उज्ज्वल है।
3. **वाद्य–वृंद** – वाद्य वृंद की परंपरा भारत में नयी नहीं है। नाटयशास्त्र में कुतुप विन्यास[4] के अंतर्गत वाद्यवृंद का वर्णन मिलता है। संगीत रत्नाकर में भी वाद्यवृंद की चर्चा वृंद भेद के अंतर्गत की गयी है।[5] इसलिए हमें यह नहीं समझना चाहिये कि वृंद वादन भारत में कोई नयी बात है। यह परंपरा तो हमारे यहां पहले से ही विद्यमान थी। पाश्चात्य संगीत के प्रभाव के कारण आधुनिक वाद्यवृंद की रचना प्रक्रिया में अनेक परिवर्तन हो गये हैं। आज वाद्यवृंद की रचनायें पाश्चात्य स्वर लिपि में निबद्ध होती हैं। अनेक वाद्यवृंद समूहों में पाश्चात्य वाद्यों का खुल कर प्रयोग किया जाता है। पंडित रविशंकर, पंडित हरिप्रसाद चौरसिया इत्यादि ने वृंद वादन में अनेक नवीन प्रयोग किये हैं। फ़िल्म संगीत के अंतर्गत, पार्श्व संगीत भी वाद्य वृंद पर ही आधारित होता है। फ़िल्म संगीत के अंतर्गत, वाद्य वृंद की परम्परा भारत में बहुत विकसित है। यद्यपि इसका मूल उद्देश्य फ़िल्म की कहानी में रस निष्पत्ति का परिमार्जन करना है, न कि मंच प्रदर्शन। तथापि यह आधुनिक समय में बहुत लोकप्रिय हो रहा है। इस प्रकार, हम देखते हैं कि वृंद वादन भी भारत में बहुत पुष्पित तथा पल्लवित हो रहा है तथा इसका भविष्य भी मंगलमय है।

   हम देख चुके हैं कि वाद्य संगीत का क्षेत्र अत्यंत व्यापक तथा विस्तृत है। इसकी व्यापकता के अनेक कारण हैं, जिनका अध्ययन वाद्य–संगीत के लाभों के अंतर्गत नीचे के अनुच्छेदों में किया जायेगा।

वाद्य–संगीत के लाभः

वाद्य–संगीत आधुनिक युग में बहुत लोकप्रिय हो रहा है। इसके पीछे अनेक कारण निहित हैं। इन कारणों के अध्ययन से ही वाद्य संगीत के लाभों पर प्रकाश डाला जा सकता है। वाद्य संगीत के निम्नलिखित लाभ हैं अथवा इसकी लोकप्रियता के पीछे जो कारण हैं उनका अध्ययन नीचे किया जा रहा हैः

1. वाद्य–संगीत का कोई साहित्य नहीं होता। यद्यपि वाद्यों में भी पाटाक्षर होते हैं, जिनके आधार पर वाद्य के बोलों को बजाया जाता है, लेकिन ये पाटाक्षर निरर्थक होते हैं। इनका भाषागत अर्थ नहीं होता। वाद्यों में हमें बंदिश का साहित्य याद नहीं करना पडता। इस प्रकार हम केवल स्वरों के आधार पर ही वाद्य संगीत का सृजन करते हैं।
2. वाद्य संगीत विशुद्ध सांगीतिक रस से सिक्त होता है। भाषा के न होने के कारण यह साहित्य के रसों से मुक्त होता है। वाद्य–संगीत पर शब्द–जनित रसों का आरोप नहीं होता। वाद्य–संगीत में भक्ति, श्रृंगार आदि साहित्यिक रसों का कोई काम नहीं होता। इसका एकमेव रस होता है – आनंद। इस प्रकार वाद्य संगीत परमानंद–सहोदर माना जाता है।
3. बोल–चाल की सभी भाषाओं से मुक्त होने के कारण वाद्य–संगीत उन स्थानों पर भी लोकप्रिय हो जाता है, जहां भारतीय भाषाओं को जानने वाले लोग नहीं होते। उदाहरण के लिए, यूरोप तथा अमेरिका के देशों में जहां भारतीय भाषाओं को जानने वाले लोग कम ही हैं, वहां भी हमारा वाद्य संगीत बहुत लोकप्रिय है। इसका कारण यह है कि वाद्य–संगीत में भाषाओं की

बाधा ही नहीं है। इसका आनंद लेने के लिए अथवा इसे सीखने के लिए किसी भाषा विशेष को जानना आवश्यक नहीं होता। इसलिए यह सभी क्षेत्रों में उन्मुक्त रूप से स्वीकार किया जा रहा है।

4. कंठ संगीत अथवा गायन की सीमायें होती हैं। मानव कंठ से औसतन तीन सप्तकों का ही विन्यास किया जा सकता है। इस के विपरीत, वाद्य संगीत में हम अति–मंद्र तथा अति तार सप्तकों को भी छू लेते हैं। गला खराब होने पर गायन में बाधा आ जाती है। लेकिन वाद्य संगीत में ऐसी समस्याओं की कोई संभावना ही नहीं रहती। इसलिए भी वाद्य संगीत बहुत लोकप्रिय हो रहा है।
5. वाद्य संगीत में हम हर स्वर के स्थान को देख सकते हैं। उदाहरण के लिए हम जानते हैं कि सितार में मध्य षड्ज किस पर्दे पर होगा, अथवा वॉयलिन में षड्ज का स्थान किस तार पर होता है। इसके विपरीत कंठ संगीत में केवल सुनकर ही यह जाना जा सकता है कि कौन सा स्वर गाया जा रहा है। उसे देखा नहीं जा सकता।

लेकिन वाद्य संगीत की कुछ सीमायें भी हैं। इन सीमाओं का अध्ययन यहां किया जा रहा है। वाद्य संगीत की निम्नलिखित सीमायें हैं:

1. भारतीय वाद्यों के आधार स्वर अथवा षड्ज एक सीमा में बँधे होते हैं। उदाहरण के लिए सितार को सी शार्प में ही मिलाया जाता है। एक आधे स्वर का फ़र्क तो चल जाता है। लेकिन हम सितार को ई शार्प अथवा बी फ़्लैट में नहीं मिला सकते। वाद्य वृंद में इस कारण अनेक समस्यायें आती हैं।
2. अनेक वाद्य इसलिए लुप्त होते जा रहे हैं, क्योंकि इनका रख–रखाव अत्यंत कठिन है। रुद्र वीणा जैसे विशालकाय वाद्यों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाना बहुत कठिन होता है। इसका वादन भी सरल नहीं होता। ऐसे वाद्य धीरे–धीरे प्रचलन की सीमाओं से परे होते जा रहे हैं।
3. अनेक वाद्यों में पशुओं का चर्म, उनके सींग, हड्डियां इत्यादि का प्रयोग होता है। पशुओं के प्रति हिंसा को आजकल रोका जा रहा है। इस कारण से हमें पशु–चर्म, सींग इत्यादि प्राप्त नहीं हो पाते। इस कारण से ऐसे वाद्यों को बनाना कठिन होता जा रहा है। वैकल्पिक पदार्थों से वैसी आवाज़ नहीं प्राप्त हो पाती जैसी वांछित होती है। इसका कोई निदान हमें सोचना होगा।

निष्कर्ष:

प्रस्तुत विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि वाद्य संगीत आधुनिक युग की ऐसी सशक्त अभिव्यक्ति है, जिसका कला जगत में एक उज्ज्वल भविष्य है। वाद्य संगीत कंठ संगीत से न तो मध्यम है और न ही छोटा। वाद्य संगीत हर प्रकार के संगीत की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है, जिसे नकारा नहीं जा सकता। पक्षियों के कलरव में, झर–झर झरते झरनों में, मंदिरों के शंख तथा घंटियों में, कल–कल निनाद करती नदियों में, वाद्य–संगीत की ही अनुकृति सुनाई देती है। संगीत के तीनों मुख्य घटकों – गीत, वाद्य तथा नृत्य में – वाद्य संगीत सर्व प्रमुख है। जैसा कि पहले भी स्पष्ट किया जा चुका है, वादन के बिना न तो कंठ संगीत ही संभव है, और ना ही नृत्य। इस लिए वाद्य संगीत के बिना हमारा संगीत अधूरा है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः –

1. गीतम् वाद्यम् तथा नृत्यम्, त्रयम् संगीतमुच्यते। – संगीत रत्नाकर।
2. संगीत रत्नाकरः प्रबंधाध्याय, द्वितीय सोपान।
3. नारदीय शिक्षा।
4. भारतीय संगीत का इतिहास। एस. एस. परांजपेय। नाटयशास्त्र में संगीत।
5. संगीत रत्नाकरः प्रकीर्णाध्यायः वृंद–भेद।